ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBBIL04292
RNI REG. NO. UPBBIL/2014/66218 PP. NO.- 231-232
ISSN NO.-2347-2944 (Print)
ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-11, No.-II, Issues-14 YEAR- Dec. -2019

हिन्दी तथा तेलुगु पहेलियों का विवेचन

के. नीरजा

सह–आचार्य – हिन्दी विभाग, एस. के. आर. महिला कलाशाला, राजमहेन्द्रवरम् (आन्ध्रप्रदेश) भारत

Received- 23.12.2019, Revised- 26.12.2019, Accepted - 29.12.2019 E-mail: mukeshchandrbs2015@gmail.com

सारांश : *पहेलियाँ लोक साहित्य का एक प्रमुख एवं महत्वपूर्ण अंग है। पहेली लोक–मानस की एक पुरातन अभिव्यक्ति है। यह संभवतः उतनी पुरातन नहीं है, जितनी कि लोक कथा और लोकगीत क्योंकि इसमें मानव बुद्धि का अपेक्षाकृत अधिक विकसित और जटिल उपयोग मिलता है। ये मौकिक रूप में प्रचलित हैं। इनमें कर्तृत्व का कोई महत्व नहीं होता है। ये मनोविनोद एवं मनोविकास के प्रमुख साधन है अतः अत्यंत लोकप्रिय है। ये अत्यंत पुरातन हैं क्योंकि उनका उल्लेख वेदों में, महाभारत में भी मिलता है। महाभारत में युधिष्ठर और यक्ष के संवाद के रूप में पहेलियों के महत्व की जानकारी मिलती है।*

कुंजी शब्द– पहेलियाँ, लोक साहित्य, लोक–मानस, पुरातन, अभिव्यक्ति, लोक कथा, लोकगीत, मानववृद्धि, मनोविनोद।

भारतीय भाषाओं में उसका सर्वत्र बोलबाला रहा है। वैदिक काल में वह ब्रह्मोदय, पौराणिक काल में प्रहेलिका, भक्तिकाल में दृष्टिकूट और रीतिकाल में पहेली के नाम से उसकी ख्याति रही है। प्रांतीय भाषाओं में बुझोवल, उलट बासियाँ, कहमुकरनी, गूढा, पारसी, आडी, ढकोसला आदि पहेली के नाम भेद हैं।

तेलुगु में 'पोडुपु कथलु या' मारू कथलु' कहते हैं। उक्त विवेचन से यह स्पष्ट होता है कि ये प्रधानतया मौखिक रूप में प्रचलित है।

पहेलियाँ मनोरंजन एवं बुद्धि परीक्षा तथा मनोविकास के साधन हैं। इसमें लोक जीवन का प्रतिबिंब दिखाई देता है। हिन्दी और तेलुगु भषियों के रहन–सहन, आचार–विचार, खान–पान आदि कुछ भिन्नताएँ होने पर भी उनमें बहुत कुछ समानताएँ भी दिखाई देती हैं। हिन्दी पहेलियों का विस्तार क्षेत्र काफी विस्तृत है। जबकि तेलुगु पहेलियों का क्षेत्र सीमित है। फिर भी हिन्दी और तेलुगु की अनेक पहेलियों में हमें समानताएँ और कुछ पहेलियों में विषमताएँ दिखाई देती है। इस आलेख का विस्तार बढ़ न जाय इसको दृष्टि में रखकर हिन्दी और तेलुगु की सिर्फ कुछ पहेलियों को यहाँ उद्धृत करके उनका विवेचन किया जायेगा।

प्रकृति संबंधी पहेलियों में–

एक डिब्बा में बारह खाना।
हर खाना में तीस–तीस दाना।। (साल, महीना, दिन)

इसमें एक वर्ष में बारह महीने और हर महीने में तीस–तीस दिन सूचित है ।

हर एक पल में तीस बीज ।
15 बीज काले ।
15 बीज सफेद । । (चांदनी, अंधेरा)

तेलुगु में महीना और हर महीने में पंद्रह दिन अमावास्या के और पंद्रह दिन पूर्णिमा के होते हैं। इसलिए इसमें अंधेरे और उजाले का उल्लेख है। तीस के द्वारा महीना सूचित है। इस प्रकार दोनों पहेलियों में समानता है।

जीव संबंधी पहेलियों में– भूराबदन रेखाएँ तीन। दाना खाती हाथ से बीन।। (गिलहरी)

इसमें गिलहरी का रंग और उसके शरीर पर तीन धारियों होना सूचित है। वह दाना खाते समय हाथ से बीन–बीन कर खाती है।

पतले–पतले दांत हैं मगर चूहा नहीं गुच्छे वाली पूँछ है मगर लोमडी नहीं।
लम्बी धारियाँ है लेकिन सर्प नहीं। श्रीराम की सहायता की लेकिन बंदर नहीं। (गिलहरी)

तेलुगु पहेली में गिलहरी की पीठ पर धारियाँ और श्रीराम की सहायिका कहा गया है। क्योंकि कहा जाता है कि श्रीराम लंका जाते समय समुद्र में मार्ग बनाने के कार्य में गिलहरी ने भी सहायता की थी और रामचंद्र जी प्रसन्न होकर उसके पीठ में हाथ फेरने के कारण धारियाँ बन गई हैं। दोनों पहेलियों में गिलहरी की शारीरिक रचना के कार्य में समानता है।

शरीर संबंधी पहेलियों में– लग–लग कहे तो न लगे बेलग कहे तो लग जाय।। (होंठ)

हिन्दी पहेली में लग–लग शब्द कहने पर दोनों होंठ आपस में नहीं मिलते हैं लेकिन बेलग शब्द कहने पर होंठ आपस में मिलते हैं ' बे ' ओष्ठ्य है।

इसी प्रकार तेलुगु में भी एक पहेली हैः अम्मा कहने पर लगता है नाना (पिता) कहने पर दूर रहते हैं।

इसमें 'अम्मा' शब्द कहने पर होंठ मिलते है और 'नाना' शब्द कहने पर नहीं मिलते हैं ।

वस्त्र– आभूषण व श्रृंगार संबंधी पहेलियों में – घर है पर दरवाजा नहीं। गर्दन है पर सिर नहीं। हाथ है पर पैर नहीं। (कमीज)

अनुरूपी लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-11, No.-II, Issues-14 YEAR- Dec. -2019

इसमें कमीज के आकार पर प्रकाश डाला गया है। तेलुगु में भी इसी प्रकार की पहेली हैः सिर नहीं, कमर नहीं धड में सुशोभित, हाथ होते हैं पर उंगलियाँ नहीं।। (कमीज)

दोनों पहेलियों में कमीज के आकार पर प्रकाश डाला गया है तथा जिन अंगों में वह धारण की जाती है वे अंग भी सूचित है।

मनोरंजन और उसके उपकरण संबंधी पहेलियों में– कागज का घोड़ा, डोर का लगाम। छोड दिया घोडा, उडेगा आसमान।। (पतंग)

पतंग कागज का बना होता है उसे धागा बांधकर आसमान में उडाया जाता है। वह बच्चों का एक मनोरंजक खेल है इसमें भी प्रतियोगिता होती है।

तेलुगु पहेली में तोडा अंतर है।

आकाश का चित्र नीचे पूँछ।। (पतंग)

पूँछ के द्वारा यहाँ पर पतंग की डोर सूचित है। पतंग आकाश में उडाया जाता है, इसलिए आकाश का चित्र कहा गया है।

घरेलु वस्तु संबंधी पहेलियों में– एक दोस्त, बडा शैतान , चढे नाक पर पकडे कान।। (चश्मा)

चश्मे को पहनते समय वह नाक पर आधारित रहता है और कानों पर उसकी डंडियों को रखा जाता है जिससे वह हिलता नहीं है और स्थिर रहता है। चश्मा कान को भी पकडता है इसलिए उसे शैतान कहा गया है। तेलुगु में भी इसी से साम्य रखती हुई एक पहेली इस प्रकार है : प्यार–प्यार से पला नाक पर खडा होकर कान दोनों खींचकर गाल दबाता है

महान पंडितों को, रास्ता दिखाना काम है। (चश्मा) महान पंडित, विद्वान लोग ही प्राय : चश्मे धारण करते हैं।

'प्यार से पल' के द्वारा चश्में की नाजूकता सूचित है। सोलह शाखाओं वाला वट वृक्ष गिरने पर नहीं उठता है।

विभिन्न डिजाइनों में रंगोली भूमि पर बनाई जाती है उसे उठाना कठिन होता है। हिन्दी में रंगोली पर पहेली हमें दिखाई नहीं देती। क्योंकि उन प्रदेशों में रंगोली का प्रचलन बहुत कम है। लेकिन दक्षिण भारत में हर दिन प्रत्येक घरों में सुबह और शाम रंगोलियाँ बनाई जाती है।

इस प्रकार पहेलियाँ लोक जीवन के अनुकूल, विभिन्न प्रकार की रची गई हैं चाहे वे हिन्दी की हों या तेलुगु की, उनमें केवल भाषा का ही अंतर होता है। जिससे यह साबित होता है कि हिन्दी और तेलुगु की अनेक पहेलियों में साम्य अधिक दिखाई देता है। कुछ ही पहेलियों में अंतर दिखाई देता है। यों लोक मानस की प्रवृत्ति में अंतर नहीं होता। भारतीय चिंतन पद्धति एक ही है तथा भारतीय ह्रदय एक है।

*****